“भारत वर्ष ही आर्यों की मूल भूमि है”

नवभारत टाइम्स (मुम्बई) में सितम्बर २०१४ में एक खबर छपी “भारत के अतीत के बारे में दिल्ली युनिवर्सिटि इतिहास की किताबें नए सिरे से लिखने के एक प्रोजेक्ट पर काम करेगी । इतिहास की किताबों में लिखा हुआ है कि करीब ३५०० साल पहले विदेशी आर्यों के कबीले पहाड़ों को पार कर भारत में आए ।“

किन्तु यदि हम प्राचीनतम् इतिहास व अन्य शास्त्रों को पढ़े, पुराने दस्तावेजों व लेखों को खंगाले तो उक्त विदेशी धारणा गलत साबित हो जाएगी । यह बात तो सत्य ही है कि आर्य जाति ही भारत देश की प्राचीनतम् मूल जाति थी । किन्तु अंग्रेजों की गलत नीतियों एवं शिक्षा प्रणाली के कारण उन्होने हमारे इतिहास में अनेक मिथ्या जानकारियां लिख दी तथा उन्होने हमें हमारे ही देश में विदेशी बना दिया ।

वेद विश्व का प्राचीनतम् धार्मिक ग्रन्थ माना जाता है, जिसकी रचना भारत के ऋषियों द्वारा की गयी । ये ऋषि आर्यों के आदि पूर्वज माने जाते हैं अतः आर्य ही भारत के पूर्वज सिद्ध होते हैं । वेद में कहीं भी उल्लेख नहीं है कि हम विदेशी थे । वेद के बाद दुनिया का प्राचीनतम ग्रन्थ मनु महाराज द्वारा रचित मनुस्मृति है उसमें लिखा है – “एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः, स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।“ इसका भावार्थ यह हुआ कि प्राचीन काल में इसी आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न विद्वानों से समस्त विश्व के लोग शिक्षा व ज्ञान प्राप्त किया करते थे । आर्यों के रहने वाले इस देश को आर्यावर्त्त कहकर पुकारा जाता था इस प्रकार आर्य इस भूमि के मूल निवासी हुए ।

बाल्मीक रामायण की रचना काल कई हजार वर्ष पूर्व का माना जाता है यह संस्कृत का महाकाव्य भी है । आर्यों की मूल भाषा संस्कृत थी, अतः यह ग्रन्थ आर्यों का ऐतिहासिक ग्रन्थ हुआ । इस दृष्टिकोण से भी आर्यों को ही देश की मौलिक नागरिकता प्राप्त होती है । रामायण में वर्णित सभी नगर व प्रान्त भारत के ही हैं, इतर नहीं । रामायण राम ने कई बार लक्ष्मण के लिए ‘आर्य’ शब्द का प्रयोग किया । स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक ‘हिन्दुत्व’ में लिखा है – “महान् प्रतापी राजा राम ने अपनी विजय पताका हिम गिरि से महासागर तक फहराई तथा उन्होंने समस्त भारत में अपना सर्वभौम राज्य स्थापित किया ।“

महाभारत काल जो कि ५००० वर्ष पुराना माना जाता है, उस महाभारत युद्ध में भारत की ही भौगोलिक सीमाओं का वर्णन आता है । स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी पुस्तक ‘सत्यार्थ – प्रकाश’ में लिखा है कि उस महाभारत काल में चीन, अमेरिका, योरोप, यूनान, इरान आदि देशों के राजाओं ने यहां आकर राजसूय यज्ञ में भाग लिया । वे आगे लिखते हैं कि स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त भारत में आर्यों का ही चक्रवर्ती राज्य रहा । मैत्री उपनिष्द में भी लिखा है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त भारत में आर्यकुल के अनेक चक्रवर्ती राजा हुए । भारत के प्रथम राजा से लेकर भरत तक ने भारत पर राज्य किया इससे स्पष्ट है कि आर्यों का भारत पर राज हजारों हजार वर्ष पुराना है । राजा भरत आर्यकुल के सुप्रसिद्ध राजा हुए, उसी के नाम से हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त से भारत वर्ष पड़ा । इनका राज्य काल महाभारत से भी अनेक वर्ष पूर्व का था, तो अग्रेजों की धारणा कि आर्य लोग ३५०० वर्ष पूर्व भारत आए, गलत साबित हो जाती है क्योंकि महाभारत काल का ही समय आज से ५००० वर्ष पूर्व का है ।

किसी भी राज्य में जब वहां के लोग निवास करते हैं तो वे उस राज्य का कोई नाम रखते हैं । यदि कोई भारत को द्रविड़ों का देश मानता है तो वे बतलाएं कि उन द्रविड़ो ने भारत का क्या नाम रखा था । इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं है । द्रविड़ लोग इस देश का नाम आर्यावर्त अथवा भारतवर्ष तो नहीं रख सकते । यदि उन द्रविड़ों के देश का कोई अपना नाम नहीं, उनका कोई प्रमाणिक इतिहास नहीं, कोई अपना धर्म ग्रन्थ नहीं, कोई साहित्य नहीं, तो किस आधार पर हम भारत को द्रविड़ों का देश मानने का दुराग्रह कर सकते हैं ।

इसी प्रकार जब कोई मानव जाति अपना मूल देश छोड़ कर अन्य देश में जाकर विस्थापित होती है, तो भी वह जाति अपने मूल देश को कभी नहीं भूलती, उसे सदा स्मरण करती है । पारसी लोग जो अपने देश फारस को छोड़ कर

भारत में आकर बसे, आज ८०० वर्ष के बाद भी उन्हे अपना मूल देश स्मरण है। फिर आर्यों को अपने मूल देश की कोई भी स्मृति क्यों नहीं और जिस देश को छोड़ कर आए उस देश में उनकी कोई स्मृतियां, कोई चिन्ह, कोई इतिहास अवशेष क्यों नहीं ? अतः आर्यों को विदेशी मानना, दिन को रात मानने के समान हठ करना है।

आर्यों की भाषा संस्कृत मानी जाती है। इस भाषा का प्रचलन लाखों वर्ष पुराना है। राम के युग से यह भाषा चली आ रही है। राम का युग लाखों वर्ष पुराना माना जाता है अतः आर्य भारत में लाखों वर्षों से रह रहे हैं। धीरे धीरे संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा का जन्म हुआ फिर उससे अनेक भारतीय भाषाएं पल्लवित एवं पुष्पित हुई। अतः संस्कृत ही समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। आर्यों का सबसे बड़ा धार्मिक ग्रन्थ वेद भी संस्कृत भाषा में भारत में लिखा गया जिसे अनेक बुद्धिजीवि सृष्टि के आदि काल से रचित मानते हैं। यदि वेद भारतीय हैं, संस्कृत भाषा भारतीय है तो इनके मानने वाले व बोलने वाले विदेशी कैसे हो सकते हैं ?

मोहन जो दडो सभ्यता की खुदाई में मिली मोहर (सील) भी हमारे प्राचीनतम् धार्मिक ग्रन्थ ऋग्वेद के प्रथम अध्याय के १६४.२० मन्त्र में वर्णित वृक्ष पर बैठे दो पक्षियों के दृश्य से हूबहू मेल खाती है अतः सिद्ध होता है कि वैदिक सभ्यता मोहन जो दडो से पूर्व की सभ्यता है।

मनुस्मृति में आर्यावर्त्त (भारत) की भौगोलिक सीमाओं का वर्णन किया गया है – "उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विध्यांचल पर्वत, पश्चिम में सरस्वती तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी बहती है, उस देश का नाम आर्यावर्त्त हैं। "

वीर सावरकर ने 'हिन्दुत्व' में स्पष्ट लिखा है – "यह सुनिश्चित है कि आज के विश्व में प्राचीन मिश्र तथा बैवीलॉन की प्राचीन सभ्यताएं सुविख्यात हैं। जब उनका नाम भी किसी ने नहीं सुना था तब भी पवित्र सिन्धु – सलिल की पावन कलकल ध्वनि के साथ अग्निहोत्र के यज्ञ – धूम्र की सुगन्ध प्रवाहित हुआ करती थी और यह महान् सिन्धु नदी तट वेदों के पावन घोष से गुंजित होता था, जिससे आर्य जनों के अन्तःकरण में आध्यात्मिकता की पुनीत ज्योति प्रज्वलित होती थी।"

भारतीय ही नही, कई पाश्चात्य विद्वान भी भारत को ही आर्यो की मूल भूमि मानते हैं। १९७५ में आक्सफोड मे छपी पुस्तक 'द अर्ली आर्यन' में टी बुरो ने स्पष्ट किया है – "The Aryan Invasion of india is mentioned is no recorded document and it can't be traced archeologically."

अमेरिका इतिहास वेत्ता डा. मिल्टन सिंगर कहते हैं – "आर्य एवं द्रविड़ों के युद्ध का कोई वैज्ञानिक आधार नजर नहीं आता।" – (द. हिन्दु, मद्रास)

एक और इतिहासकार एलफिन्स्टन ने "हिस्ट्री ऑफ इन्डिया" पुस्तक में लिखा है – "वेद में, मनुस्मृति में अथवा अन्य किसी पौराणिक संस्कृत ग्रन्थ में आर्यों को भारत के अलावा और किसी देश का निवासी नहीं बताया गया है।"

भारत में अंग्रेजों ने अपना साम्राज्य सुदृढ़ करने हेतु उन्होने यहां के स्वर्णिम इतिहास, महान धार्मिक ग्रन्थों, सभ्यता – संस्कृति व प्राचीन शिक्षा पद्धति को नष्ट भ्रष्ट करने का पूरा प्रयास किया। इस कार्य में मैक्डानल्डॉ, मैक्समूलर तथा मैकॉले जैसे विद्वानों ने अपनी अहं भूमिका निभाई। उन्होंने यहां के गौरवशाली इतिहास को बदलने का भरसक प्रयास किया और वे इस कुकृत्य में सफल भी हुए।

किन्तु कहावत है कि सुबह का भूला यदि शाम को घर वापस आ जाए तो भी वह भूला नही कहलाता आज आजादी के ६६ वर्षों के बाद भी यदि हमारी सरकार इस नेक कार्य को करने का कृत्संकल्प करती है तो भी वह बधाई की पात्र है। इससे हमारा खोया हुआ स्वर्णिम इतिहास पूर्णजिवित होगा और हमारा सोया हुआ स्वाभिमान पुनः जागृत होगा।

संदीप आर्य

मन्त्री – वैदिक मिशन मुम्बई